सत्यापित शीर्षक क्रमांक
MAH/HIN/50786/13/1/2013 T.C.

सृष्टी पाक्षिक एग्रो

ग्रामीण विकास का सम्पूर्ण पाक्षिक

वर्ष- 1, अंक-5 | मुम्बई, 1 अप्रैल से 15 अप्रैल 2013 | Visit us:www.srushtiagronews.com | पृष्ठ-8 | मूल्य-2/- रुपये

किसान नवीन तकनीकी से अधिक उत्पादन करने का प्रयास करें: मीणा

राज्य सरकार ने आमजन के हित में अनैकों जनकल्याणकारी योजनाऐं संचालित कर ग्रामीण व गरीब को लाभान्वित करने का प्रयास

जयपुर/दौसा। सार्वजनिक निर्माण राज्यमंत्री मुरारीलाल मीणा ने कहा कि किसान अपने हितों का ध्यान रखते हुए कृषि वैज्ञानिकों की सलाह लेकर नवीन तकनीकी से कृषि उत्पादन करें तो कम जमीन में कम पानी से अधिक उत्पादन प्राप्त कर सकते है। जिले के विभिन्न क्षेत्रों में किसानों को कृषि की नवीन तकनीकी की जानकारी उपलब्ध करवाने के लिए कृषि मेलों का आयोजन किया जाता है।

ग्राम पंचायत सैंथल में राष्ट्रीय नेटवर्क अनुसंधान मरू दलहन परियोजना कृषि अनुसंधान, दुर्गापुरा द्वारा आयोजित किसान मेलें को सम्बोधित करते हुए सार्वजनिक निर्माण राज्यमंत्री ने ये बात कही। उन्होंने कहा कि किसान परम्परागत कृषि उत्पादन के तरीकों को छोडकर

नवीन तकनीकी से कृषि उत्पादन करने के लिए वैज्ञानिकों की सलाह के अनुसार खेती करे तो अधिक उत्पादन प्राप्त कर सकते है। उन्होंने कहा कि जनसंख्या बढ रही है, पानी कम होता जा रहा है, पुराने तरीकों से अधिक मेहनत के बाद कम उत्पादन होता है। किसानों के हितों को ध्यान मे रखते हुए राज्य सरकार ने कृषि के क्षेत्र में अन्य कल्याणकारी योजनाऐं संचालित कर किसानों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रयास कर रही है। उन्होंने कहा कि आजादी के बाद पहली बार राज्य सरकार ने आमजन के हित में अनैकों जनकल्याणकारी योजनाऐं संचालित कर ग्रामीण व गरीब को लाभान्वित करने का प्रयास किया है। उन्होंने उपस्थित ग्रामीणों से कहा कि

शेष पृष्ठ 3 पर...

बजट सत्र में पास नहीं हो पाया खाद्य सुरक्षा बिल

नई दिल्ली। कांग्रेस अध्यक्ष की महत्वाकांक्षी योजना खाद्य सुरक्षा बिल लोकसभा में पेश नहीं हो सका। हालांकि सरकार की मंशा थी कि बजट सत्र में ही इस बिल को संसद से पास करा लिया जाए, पर ऐसा नहीं हो पाया। लोकसभा अब 22 अप्रैल तक के लिए स्थगित हो गई। 2014 की चुनाव तैयारियों में जुटी कांग्रेस चाहती थी कि आगामी लोकसभा चुनाव तक इसे पूरे देश में लागू किया जा सके। भ्रष्टाचार, घोटाले और महंगाई के मुद्दे पर सरकार परले से बैकफुट पर है ऐसे में सरकार के पास लोगों से वोट मांगने के लिए कोई खास वजह नहीं है। खाद्य सुरक्षा बिल ऐसी योजना है जिसके बल पर लोगों के सामने वोट के लिए हाथ फैला सकती है। प्रस्तावित खाद्य सुरक्षा बिल के तहत हर एक व्यक्ति को 5 किलो सस्ता अनाज देने की योजना है यानी पांच सदस्यों वाले परिवार को हर महीने 25 किलो अनाज मिलेगा। इस योजना से सरकारी खजाने पर करीब 1 लाख 25 हजार करोड़ रुपये का बोझ पड़ेगा। सोनिया गांधी के महत्वाकांक्षी खाद्य सुरक्षा बिल को कैबिनेट पहले ही इसे मंजूरी दे चुकी है।

प्याज के निर्यात पर रोक लगाने से इंकार

नई दिल्ली। प्याज के मूल्य में आई तेजी अस्थाई थी देश में 170 लाख टन प्याज का उत्पादन प्याज की खपत का आंकड़ा 150 लाख टन पर सरप्लस स्टॉक होने के कारण निर्यात की अनुमति केंद्र सरकार ने प्याज के निर्यात पर प्रतिबंध लगाने से इंकार किया है। उसका कहना है कि प्याज के मूल्य में अस्थाई

तेजी रही है क्योंकि कुछ उत्पादक क्षेत्रों में बेमौसमी बारिश हुई और मंडी बंद रहीं। वाणिज्य मंत्री आनंद शर्मा ने बताया कि हमारे पास प्याज का पर्याप्त स्टॉक मौजूद है और किसी भी स्तर पर इसकी कमी नहीं है। घरेलू खपत का आकलन करने के बाद सरप्लस

शेष पृष्ठ 3 पर...

प्रतिकूल मौसम से घटेगा रबी उत्पादन

नई दिल्ली। खराब मौसम के साथ-साथ बुआई सीजन के दौरान आंध्र प्रदेश में नीलम चक्रवात की वजह से हुए नुकसान और उसके बाद फसलों की कटाई के दौरान हफ्ते भर हुई बेमौसम की बारिश से इस साल रबी फसलों के उत्पादन में भारी गिरावट की आशंका है।

हालांकि किसी भी आधिकारिक एजेंसी ने आंध्र प्रदेश सहित अन्य राज्यों में फसलों को हुई क्षति का आकलन नहीं किया है, लेकिन ऐंजल ब्रोकिंग का अनुमान है कि हल्दी उत्पादन 50 फीसदी और मिर्च उत्पादन 30 फीसदी घट सकता है। पिछले साल अक्टूबर के दौरान आंध्र प्रदेश के सीमावर्ती इलाकों में नीलम चक्रवात की वजह से मसालों और अन्य नकदी फसलों को बहुत नुकसान हुआ था। एक अनुमान के मुताबिक 5,00,000 हेक्टेयर रकबे की फसल चक्रवात की चपेट में आ गई थी।

चूंकि बुआई का समय बीत जाने के कारण दोबारा फसल लगाना संभव नहीं, इसलिए समग्र तौर पर रकबे में गिरावट आई है, लिहाजा इस साल मसालों का कुल उत्पादन कम रहेगा। ऐंजल ब्रोकिंग की वरिष्ठ अनुसंधान विश्लेषक वेदिका नार्वेकर ने कहा, बुआई के सीजन के दौरान मसालों के भाव कम थे क्योंकि पिछले साल अच्छा उत्पादन हुआ था। नतीजतन किसानों ने इस साल मसालों की कम खेती की। प्रतिकूल मौसम की वजह से भी अनुमानित उत्पादन में भारी गिरावट आई है।' चक्रवात ने तंबाकू की फसल को भी क्षति पहुंचाई है। तंबाकू बोर्ड का अनुमान है कि इस साल आंध्र प्रदेश में इस जिंस का उत्पादन करीब 17 करोड़ किलोग्राम रहेगा, जबकि पिछले साल प्रदेश में 17.5 करोड़ किलो तंबाकू का उत्पादन हुआ था।

इसी महीने बेमौसम बारिश से आलू की फसल भी प्रभावित होने की आशंका है क्योंकि यह आलू को खेतों से निकालने का मौसम होता है। आलू के प्रमुख उत्पादक राज्यों में लगातार चार दिन बारिश होती रही। केंद्रीय आलू अनुसंधान संगठन के निदेशक वीर पाल सिंह ने कहा, उत्तर प्रदेश में मेरठ समेत दो आलू उत्पादक इलाकों को छोड़कर अन्य क्षेत्रों में आलू की फसल को कम क्षति पहुंची है। शुरुआती आकलन के विपरीत फसल सडने का असर भी कम ही है।' राष्ट्रीय बागवानी अनुसंधान एवं विकास फाउंडेशन के निदेशक आर पी गुप्ता ने कहा, महाराष्ट्र, गुजरात और मध्य प्रदेश जैसे राज्यों में रबी फसल पर बेमौसम बारिश का कम असर हुआ है। चूंकि आलू की फसल पूरी तरह तैयार है इसलिए उत्पादन

शेष पृष्ठ 3 पर...

गर्मी के मौसम में पर्याप्त बिजली आपूर्ति करने के निर्देश

वर्ष के अन्त तक प्रदेश विद्युत उत्पादन में आत्मनिर्भर हो जायेगा

जयपुर। ऊर्जा मंत्री डॉ. जितेन्द्र सिंह ने विद्युत भवन में राज्य में विद्युत आपूर्ति की वर्तमान स्थिति एवं गर्मी के मौसम में प्रदेश में पर्याप्त बिजली उपलब्धता एवं आपूर्ति के सम्बन्ध में समीक्षा की। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिये कि जहां जन स्वास्थ्य अभियांत्रिक विभाग के कनेक्शनों के लिये डिमाण्ड नोट की राशि जमा है उन्हें तुरन्त कनेक्शन जारी करें।

डॉ. जितेन्द्र सिंह द्वारा अप्रेल, मई व जून माह में बिजली की उपलब्धता एवं सम्भावित मांग के बारे में समीक्षा की। इस अवधि में अधिकारियों से बिजली की उपलब्धता व आपूर्ति के बारे में विस्तार से विचार -विमर्श किया गया। ऊर्जा मंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिये कि आगामी गर्मी के मौसम में प्रदेश के बिजली उपभोक्ताओं को बिना व्यवधान के गुणवत्तापूर्ण बिजली की आपूर्ति सुनिश्चित करें।

बैठक में अधिकारियों द्वारा बताया गया कि मई में छबड़ा-111 से 250 मेगावाट व जून में कवई से 600 मेगावाट बिजली का उत्पादन शुरु हो जाएगा एवं विण्ड से भी विद्युत का उत्पादन बढ़ जायेगा, जिससे गर्मी के मौसम में अतिरिक्त बिजली मिल सकेगी। इस तरह इन सभी इकाईयों से विद्युत उत्पादन प्रारम्भ होते ही इस वर्ष के अन्त तक प्रदेश विद्युत उत्पादन में आत्मनिर्भर हो जायेगा।

ऊर्जा मंत्री ने 33 केवी जी.एस.एस. बनाने के कार्य की प्रगति, कम्पनियों की वित्तीय स्थिति एवं 300 से अधिक आबादी की ढ़ाणियों में घरेलू कनेक्शन देने के कार्य की प्रगति सहित विभिन्न कार्य एवं योजनाओं की प्रगति की समीक्षा भी की। बैठक में तीनो विद्युत वितरण कम्पनियां के अध्यक्ष कुंजीलाल मीणा ने बताया कि राज्य में विद्युत की उपलब्धता पर्याप्त है एवं आगामी तीन माह में बिजली उपभोक्ताओं को निर्बाध बिजली की आपूर्ति की जायेगी।

बैठक में प्रसारण निगम के अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक शैलेन्द्र अग्रवाल, ऊर्जा सचिव नरेश पाल गंगवार, अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक विद्युत उत्पादन निगम पी.एन.सिंधल, प्रबन्ध निदेशक डिस्कॉम अजमेर पी.एस.जाट, जोधपुर डिस्कॉम के प्रबन्ध निदेशक ऐ.के.गुप्ता, निदेशक पावर ट्रेडिंग, निदेशक आपरेशन प्रसारण निगम, निदेशक तकनीकी जयपुर डिस्कॉम एवं मुख्य अभियन्ता एलडी प्रसारण निगम सहित निगमों के सभी वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे।

कृषक-वैज्ञानिक संवाद का सफल आयोजन

पंतनगर।पाचवें एक दिवसीय 'कृषक-वैज्ञानिक संवाद एवं प्रषिक्षण' कार्यक्रम का आयोजन 23 मार्च को नैनीताल जनपद के हल्द्वानी ब्लाक के बिन्दुखत्ता के क्षेत्र के ग्राम-शास्त्री नगर के कालिका मंदिर प्रांगण में किया गया। प्रषिक्षण कार्यक्रम का आयोजन कृषि महाविद्यालय, पंतनगर एवं महाविद्यालय में चल रही एन.ए.आई.पी. शोध परियोजना-'भारत में कृषि बाजार आसूचना केन्द्रों की स्थापना एवं नेटवर्किंग' के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। पंतनगर विष्वविद्यालय के 12 वैज्ञानिकों ने किसानों के प्रश्नों के उत्तर दिये।

किसान मजबूरी में करते है आत्म हत्या: दिलीप वलसे

नागपुर। विधानसभा अध्यक्ष दिलीप वलसे पाटील ने विदर्भ और मराठवाडा में किसानों की आत्महत्या की घटनाओं के लिए बैंकों को जिम्मेदार बताया। किसानों के लिए आयोजित मैराथन दौड के अवसर पर उन्होने कहा कि विदर्भ में भू-विकास बैंकों की आर्थिक स्थिति खराब है।

खराब स्थिति के कारण वे किसानों को कर्ज नहीं दे सकते हैं। ऐसे में जरूरतमंद किसान राष्ट्रीयकृत बैंकों से कर्ज की मांग करते हैं। यहां भी उन्हें निराशा हाथ लगती है। निराश किसान मजबूरन आत्महत्या जैसे कदम उठाते हैं। जरूरत है किसानों का आत्मविश्वास बढ़ाकर उन्हें आत्महत्या की प्रवृत्ति से विमुख करने की।

उन्होंने किसानों से अपील की है कि वे सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाए, एवं किसानों को आत्महत्या से बचाना है तो बेहतर जल संसाधन सुविधाएं, नई आधुनिक कृषि तकनीक एवं बाजार की व्यवस्था करानी होगी। बदलती नेसर्गिक परिस्थिति, बदलते नेसर्गिक वातारण का कृषि पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। जिसके कारण किसानों को कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। एक ओर प्रकृति की मार तो दूसरी ओर किसानों पर मंडराता संकट, जिससे किसान उदासीनता की ओर बढ़ रहे हैं। यह अच्छे संकेत नहीं है। ऐसे में किसानों को आधार देने की जरूरत है। उनको अत्मनिर्भर बनाने की जरूरत है।

सम्पादकीय

हारिए ना हिम्मत.....

दो प्रश्नों पर अक्सर ही हम विचार करते हैं - कि अगर ऐसा होता तो क्या होता और अगर ऐसा नहीं होता तो क्या होता? फिर हम अपनी अक्ल के घोड़े दौड़ाते और कल्पना के आधार पर निष्कर्ष निकालते हैं कि- 1) अगर ऐसा होता तो यह हो जाता। 2) अगर ऐसा नहीं होता तो ऐसा हो जाता।

ये दोनों कल्पनाएं हमारे समय का काफी बड़ा हिस्सा हजम कर जाती हैं।

अगर कोई व्यक्ति हमसे आगे निकल जाये तो हमारी अन्तर्चेतना में कल्पना उभरती है कि कितना अच्छा होता कि उसके स्थान पर मैं विराजमान हो जाता।

फिर हम कारणों का विश्लेषण करते हैं और कहते हैं कि यदि ऐसा होता तो यह हो जाता। फिर मन में गिला पैदा हो जाता है और हम कहते है कि हे प्रभु! तूने मेरे साथ ऐसा क्यों किया, वैसा क्यों नहीं किया, जैसा उसके साथ हुआ? इस अवसर के लिए निरंकारी बाबा जी कहते हैं-इन्सान को अगर कुछ कष्ट मिलता है तो वह प्रभु को दोष देते हुए कहता है कि मेरे ही साथ ऐसा क्यों हुआ जबकि जब कुछ उपलब्धि हासिल होती है तब कभी नहीं कहता कि मेरे साथ ही ऐसा क्यों हुआ। तब प्रायः वह प्रभु के प्रति कृतज्ञता का भाव भी नहीं रखता। अपनी उपलब्धि का श्रेय रत्ती भर भी प्रभु को देना वह गँवारा नहीं करता।

उस समय हम यह भूल जाते हैं कि स्थान, समय व वातावरण तो सबको लगभग एक जैसा ही मिलता है। वही दुनिया, वही काल-क्रम, वही देश-शहर लेकिन परिस्थितियों के साथ कम्पसपदह (व्यवहार) सब अपनी-अपनी तरह करते हैं।

कोई अनुकूल समय की इन्तजार करता रहता है। समय गुजरता रहता है और वह हाथ मलता रहता है। जैसे-जैसे समय गुजरता जाता है, जीवन के वर्ष घटते जाते हैं। जवानी निकल जाती है तो पुराने दिन अच्छे लगने लगते हैं। कवि 'भाषी' मुलतानी के अनुसार-

बन्दे उत्ते बुढ़ापे दी, जदों निशानी आन्दी ए,
उठदे-बहन्दे, खान्दे-पीन्दे याद जवानी आन्दी ए।

जवानी के दिन तो लौटकर आते नहीं, वह आदमी जो पहले तो भविष्य की ओर टकटकी लगाये रखता था, बुढ़ापे में भूतकाल को निहारता रहता है। अन्ततः कारवाँ गुजर जाता है और वह गुबार ही देखता रहता है।

यह लगभग हर उस बूढ़े की व्यथा है, जो जीवन में वह उपलब्धि हासिल नहीं कर पाया जिसे वह करना चाहता था। जब शरीर में ऊर्जा थी, तब वह अनुकूल परिस्थितियों की प्रतीक्षा कर रहा था और जब ऊर्जा क्षीण होने लगी, इन्द्रियों की क्षमता चुकने लगी, तब से वह पश्चाताप की अग्नि में जलकर घुलने लगा।

अब क्रोध उसे स्वयं के ऊपर होता है लेकिन झल्लाता दूसरों के ऊपर है। उसका परिणाम यह होता है कि घर वाले उस फालतू का सामान समझने लगते हैं और उसके पास जाने से बचने लगते हैं। वह बेचारा जो कभी मोहल्ले का हीरो हुआ करता था, अब जीरो होकर चारपाई पर लदा रहता है।

यदि प्रभु ने पर्याप्त आयु लिखी हो तो हर युवा ने तय आयु में बूढ़ा होना ही है। उस आयु में पछताना न पड़े इसके लिए जरूरी है कि- 'अगर ऐसा होता तो यह हो जाता' और 'अगर ऐसा न होता तो यह हो जाता' वाले विषयों पर ज्यादा समय व्यर्थ न किया जाये। कल्पना से कविताएं तो लिखी जा सकती हैं, आविष्कार भी किये जा सकते हैं लेकिन जीवन तो हकीकत से रू-ब-रू होकर जिया जाता है इसलिए यथार्थवादी बनें।

मान लीजिए हमारे सामने आलू की सब्जी है। हमारे किसी परिचित के सामने पनीर की सब्जी है। दोनों के यथार्थ अलग-अलग हैं। पनीर की उसकी सब्जी को अपने सामने खिसकाने का जुगाड़ करने की बजाय बेहतर है, अपने सामने जो आलू की सब्जी है, उसी का इस्तेमाल कर लिया जाये। कम से कम भूख का मसला तो हल हो जायेगा अन्यथा कई बार यह भी होता है कि हम दूसरे की प्लेट झपटने के लिए जुगाड़बाजी कर रहे हों और कोई तीसरा हमारी प्लेट पर ही हाथ साफ कर जाये। ऐसी परिस्थितियों के लिए सन्त-महात्माओं ने लिखा है- दुविधा में दोनों गये-माया मिली न राम।

यह सबसे ज्यादा दुखद स्थिति है इसलिए बेहतर है, जो परिस्थितियाँ हमारे सामने हों उन्हें पूरी क्षमता से कमंस (व्यवहार) किया जाये।

रिलायन्स के संस्थापक धीरू भाई अम्बानी समेत अनेक ऐसे लोग हैं, जिनकी परिस्थितियाँ हमसे भी ज्यादा विपरीत थीं परन्तु वे उन परिस्थितियों से घबराये नहीं। उन्होंने परिस्थितियों का गहराई से अध्ययन किया, सारे विकल्पों पर दूरदृष्टि से विचार किया और तब विकल्प चुना। परिणामों ने बता दिया कि उनका चुना गया विकल्प सही था। अन्ततः वे महान कहलाये। उन्हें कभी उपेक्षा का शिकार नहीं बनना पड़ा। उम्र के साथ-साथ उनकी महत्ता भी बढ़ी क्यों कि वे सफ्लता का शिखर चूम चुके थे और उनके अनुभवों की कीमत लगातार बढ़ रही थी।

समय रहते चेत जाएं। एक ऐसी सूची बनाएं जिसमें वे लक्ष्य लिखे हों जिन्हें अभी हासिल नहीं कर पाये लेकिन करना चाहते हों। महीने में एक बार उस सूची पर नज़र डाल ली जाए ताकि एक-एक कर उन्हें हासिल किया जा सके और बुढ़ापे की उम्र में भी शान से जी सकें। परमपिता परमात्मा हम सबको साफनीयत, पर्याप्त क्षमता तथा दृढ़ निश्चय के गुण प्रदान करे, यही प्रार्थना है।

मुलहठी की वैज्ञानिक तकनीक

सम्पूर्ण भारतवर्ष में एक अकेली उपलब्ध विकसित मुलहठी की किस्म ''हरियाणा मुलहठी न.-1'' हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार द्वारा 1989 में विकसित की गई हैं। गुणवता में बेजोड़ (6-7: ग्लासीराइजीन) है और 2) -3 वर्षीय व कम सिंचाई वाले इलाकों के लिए उत्तम है। मुलहठी की जड़ें मूसलादार होती है, जिससे विभिन्न शाखायें निकलती हैं। औषधीय उपयोग में केवल जड़ें ही उपयोग में

आती हैं। इसकी भारतवर्ष में व्यापारिक स्तर पर कम खेती होती है तथा इसकी जड़ों का बड़े पैमाने पर आयात किया जाता है।

औषधीय उपयोग: मुलहठी का उपयोग अधिकत्तर सर्दी, खाँसी तथा जुकाम की दवाईयाँ बनाने में होता है। मुलहठी की जड़ों को चूर्ण के रूप में उपयोग किया जाता है। यह वमननाषक और पीपासानाषक है। तीखे या अम्लोतेजक पदार्थो के खा लेने पर होने वाली पेट की जलन को दूर करने में यह चमत्कारी पायी गयी है। पैप्टिक अलसर व इससे होने वाली रक्त की उल्टी में यह अत्यन्त प्रभावषाली पायी गयी है। यकृत रोगों में भी यह गुणकारी है। षिरा रोगों में पीड़ा निवारण हेतु, बुद्धि-वर्धन के लिये, एनीमिया, दमा, टीबी तथा कफ आदि रोगों में भी इसका उपयोग किया जाता है। इसका प्रयोग कीटाणुनाषक औषधियों, एल्कोहल के उत्पादन, यीस्ट के कल्चर आदि में किया जाता है। इसका प्रयोग मधुर स्वाद बनाने के लिये, कम ऊर्जा वाले भोजन पदार्थो, चाकलेटस, चुइंगम, बीयर, कैंडी आदि उद्योगों में भी किया जाता है।

जलवायु: उष्ण तथा समषीतोष्ण

भूमि: अच्छे जल निकास वाली दोमट मिट्टी जिसका पी. एच. मान सामान्य (7-8) होना चाहिये।

किस्म: हरियाणा मुलहठी नं.-1 शरत की प्रथम किस्म है। इसकी जड़ों में 6-7: ग्लासीराइजीन होता है।

बीज की मात्रा: बिजाई के लिये 100-120 किलो ताजा जड़ प्रति एकड़ पर्याप्त रहती है।

बिजाई का समय: बिजाई साल में दो बार कर सकते हैं। यदि पानी का अच्छा प्रबंध हो तो इसको 15 जनवरी से 15 फरवरी तक लगाना उत्तम रहता है। इसको वर्षाकाल में जुलाई-अगस्त में भी लगाया जा सकता है।

खेत की तैयारी: खेत को 2-3 बार जुताई द्वारा भुरभुरा तैयार करें तथा सुहागा लगाकर समतल बना लें, जिससे खेत में पानी ज्यादा समय तक भरा न रह सके।

खाद: अच्छी गली-सड़ी 10-12 टन प्रति एकड़ गोबर की खाद खेतों में डालनी चाहिये।

बिजाई का तरीका: जड़ों की लगभग 6-9 इंच लम्बी कलमें काटकर लाईनों में बोये। लाईन से लाईन का फासला लगभग 2.5 से 3.0 फुट तथा कलम से कलम का फासला लगभग 1.0 फुट रखें। जड़ों को 1-2 इंच गहरा मिट्टी में दबा दें तथा फिर सुहागा लगा कर हल्का पानी लगा दें। इससे जमाव अच्छा होता है। पानी ज्यादा समय तक खेत में खड़ा नहीं रहना चाहिये। लगभग 12,000 से 15,000 कलमें प्रति एकड़ लगती हैं।

सिंचाई: शुरू में पौधो के अच्छे जमाव के लिये खेत में नमी रहनी चाहिये। यदि मुलहठी जनवरी-फरवरी में लगाई है तो वर्षा होने तक आवष्यकतानुसार 3-4 बार सिंचाई अवष्य लगाए। इसकी खेती के लिये अधिक सिंचाई की आवष्यकता नहीं होती है।

निराई-गुड़ाई: पहले साल 2-3 निराई-गुड़ाई करनी चाहिए। सर्दी के मौसम में मुलहठी के पौधों से पत्ते झड़ जाते हैं। जनवरी-फरवरी माह में खेत में भली-भाँति निराई-गुड़ाई करके खरपतवारों को निकाल दें। फरवरी के अन्त में जड़ों से नए पत्ताव शुरू हो जायेंगे तथा मार्च में खेत हरा-भरा लगने लगेगा।

कीट व रोग नियन्त्रण: पत्तों पर कभी-कभी पत्तों का धब्बेदार रोग लगने के कारण पत्ते पीले पड़ जाते हैं तथा एफ्डि भी पत्तों के रस को चूस कर फसल को नुकसान पहुँचाते हैं। नीम के पत्तों या निबोलीयों का काढ़ा बनाकर खेत में छिड़कने से कीट व रोगों की रोकथाम कर सकते हैं।

खुदाई: खुदाई से 8-10 दिन पहले खेत में हल्का पानी देना चाहिये तथा जब खेत खुदाई के योग्य हो जाये तब 2.5 से 3.0 वर्ष बाद 1.5-2.0 फुट गहरा खोदकर जड़ों को निकालें।

इसके लिए डिस्कहैरो के बाद कल्टीवेटर का प्रयोग उचित रहता है तथा बाद में जड़ों को इकेा कर लेते हैं। इस प्रकार 2-3 बार करने से अधिकांष जड़ें निकल आती हैं। इसके बाद जड़ों को फर्ष पर फैलाकर छाया में सुखा लेना चाहिये। सुखाने के बाद जड़ों में नमी 10 प्रतिषत से अधिक नहीं होनी चाहिये तथा सुखने के बाद बोरों में भरकर सुरक्षित स्टोर में रखना चाहिये जहाँ नमी न हो।

जड़ों की पैदावार: मुलहठी की फसल से लगभग 25-30 क्विंटल सूखी जड़ें प्रति एकड़ प्राप्त की जा सकती है।

बाजार मूल्य: मुलहठी की जड़ों का वर्तमान बाजार मूल्य 35-40 रूपये प्रति किलोग्राम है। यह भी मुलहठी की जड़ की गुणवत्ता पर निर्भर करता है। अच्छी सूखी तथा अन्दर से पीली जड़ों की कीमत ज्यादा मिलती है। इसकी खेती से 2)-3 वर्ष बाद लगभग एक लाख रूपये तक की शुद्ध आमदनी हो सकती है। इसकी कास्त में लगभग 20,000-25,000 रूपये प्रति एकड़ लागत आ जाती है।

बाजार: प्रमुख आर्युवेदिक कम्पनीयां मुलहठी की जड़ों के प्रमुख खरीददार हैं। विभिन्न जड़ी-बुटियों के विक्रेताओं (खारी बावली, अमृतसर, सहारनपुर, इंदौर) के माध्यम से भी इसको बेचा जा सकता है।

आई. एस. यादव, ओ. पी. यादव एवं जे. एस. हुड्डा,
औषधीय, सगंध एवं अल्प प्रयुक्त पौध संभाग,
अनुवांषिकी एवं पौध प्रजनन विभाग
सी. सी. एस. हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार - 125 004

शेष पृष्ठ 1 का.....

किसान नवीन तकनीकी से...

सरकार द्वारा संचालित जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी रखते हुए अधिक से अधिक लाभ उठाने का प्रयास करें।

किसान मेले की अध्यक्षता करते हुए कृषि अनुसंधान संस्थान, दुर्गापुरा के क्षेत्रीय निदेशक डा0 स्वरूप सिंह ने कहा कि संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा 15 फसलों के बीजोउपचार करवाने व नवीन तकनीकी से कृषि उत्पादन के बारे में किसानों को जानकारी दी जाती है। सभी किसान जिले में संचालित कृषि विज्ञान केन्द्र में कार्यरत वैज्ञानिकों से सलाह लेकर कृषि उत्पादन करें तो कम पानी से कम जमीन में अधिक उत्पादन का लाभ ले सकते है। इस अवसर पर वैज्ञानिक डा0 एस एल शर्मा ने कृषि अनुसंधान केन्द्र, दुर्गापुरा द्वारा किसानों को दी जाने वाली सुविधाओं के बारे में जानकारी दी। कृषि वैज्ञानिक डा. एस के टाँक ने विभिन्न फसलों को बीमारी से बचाने के उपायों के बारे में जानकारी दी। राज्यमंत्री मुरारीलाल मीणा के द्वारा विधानसभा क्षेत्र दौसा में सवा चार साल में कराये गये विकास कार्यो के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि ग्रामीण भावनाओं में बहकर नहीं बल्कि सोच समझकर अपना नेता चुनने का निर्णय ले तो विकास को ओर गति मिल सकती है।

प्याज के निर्यात पर रोक.....

प्याज का ही निर्यात करने की अनुमति दी गई है। देश में 170 लाख टन प्याज का उत्पादन 150 लाख टन घरेलू खपत से कहीं ज्यादा है। उन्होंने कहा कि कृषि उपजों का निर्यात नीति विभिन्न कारकों पर निर्भर होती है। इनमें घरेलू खपत, बफर स्टॉक और रणनीतिक स्टॉक के बाद बची कृषि उपज का ही निर्यात किया जाता है। उन्होंने बताया कि प्याज के मामले में 84 फीसदी उत्पादन की घरेलू खपत हो जाती है। सरकार छह फीसदी स्टॉक बफर स्टॉक के रूप में रखती है।

इसके बाद बचे 7 फीसदी प्याज का ही निर्यात किया जाता है। सप्लाई संबंधी वचनबद्धता के चलते हम अनायास निर्यात पर रोक नहीं लग सकते हैं। निर्यात पर रोक लगाने से अंतरराष्ट्रीय बाजार से भारत की मौजूदगी खत्म हो जाएगी और इसका लाभ प्रतिस्पर्धी देशों को मिलेगा। शर्मा के अनुसार राजस्थान और मध्य प्रदेश में बारिश होने और आजादपुर मंडी बंद रहने की वजह से दिल्ली में जनवरी व फरवरी के दौरान प्याज के दाम बढ़े थे। मूल्य में अस्थाई बढ़ोतरी 22 जनवरी को शुरू हुई और एक पखवाड़े में मूल्य सामान्य स्तर पर आ गए। 11 मार्च को आजादपुर मंडी में प्याज के दाम 13.10 रुपये प्रति किलो रहे। हालांकि फुटकर में प्याज के दाम करीब 10-11 रुपये प्रति किलो ज्यादा हैं। लेकिन कीमत में यह अंतर फुटकर विक्रेताओं के कारण है।

प्रतिकूल मौसम से घटेगा रबी उत्पादन.....

पर शायद ही कोई असर हो। इस बारिश से केवल आलू को खेतों से निकालने में लगभग एक हफ्ते की देरी होगी।' बहरहाल, प्रतिकूल मौसम की वजह से कीमतों में आई अचानक तेजी थमने लगी है। मंडियों में फसलों की आवक बढने लगी है इसलिए कीमतें बढने की अशंका भी घटती जा रही है। पिछले दो सप्ताह के दौरान कृषि जिंसों की कीमतों में लगभग 5 फीसदी की गिरावट आई है। तीन महीने पहले रबी फसलों की बुआई शुरू होने से कुछ समय पहले तक इन जिंसों के भाव करीब दोगुने हो गए थे। निकट अवधि में इन जिंसों के भाव कम ही रहने की संभावना है, हालांकि लंबी अवधि में भाव चढ़ भी सकते हैं।

शतावर (एसपेरेगस रेसीमोसस) - शक्ति एवम् दुग्धवर्धक पौधा

भारत की शक्तिवर्धक जड़ी-बूटियों में शतावर का महत्वपूर्ण स्थान है। शतावर ऊपर की ओर चढ़ने वाली बेलनुमा लता है जिसके कांटे तेज तथा आगे की ओर मुड़े होते हैं। इसकी जड़ों में सफेद और लम्बे कंद होते हैं और यही जड़ें बाजार में शतावर के नाम से बिकती हैं। शतावर की लताओं पर सफेद छोटे-छोटे फूल नवम्बर में आते हैं तथा फ्ल सर्दियों में पकते हैं जो पकने पर लाल रंग या गहरे बैंगनी रंग के होते हैं।

औषधीय उपयोग: प्रदर रोग, अपरमार, हिस्टीरिया, पथरी, खांसी, रतोंधी आदि अनेक रोग हैं जिसमें शतावर रामबाण औषधि का काम देती है। मधुर सिकत, रसयुक्त, गुरू, शीतवीर्य, रसायन, मेधा (धारण शक्ति) कारक, जठराग्निवर्धक, पुष्टिदायक, स्निग्ध, नेत्रों के लिए हितकर, शुक्रवर्धक स्तनों में दूध बढ़ाने वाली, बलकारक, गुल्म, वात, पित, रक्तशोध को दूर करने वाली होती है। इसका उपयोग अन्य औषधियों के साथ नपुंसकता, शुक्रमेह, शुक्रतारत्य, नेत्ररोग, अतिसार, ग्रहणी, मूत्रकच्छ, रक्तपित, अपरमार में किया जाता है। इसके अंकुरों की सब्जी अपचन में देते हैं।

जलवायु: यह शीत प्रदेशों व ऊष्ण क्षेत्रों में 1400 मीटर की ऊंचाई तक आसानी से उगाई जा सकती है। जिन स्थानों पर 1000 से 2500 मि. मी. तक वर्षा होती है एवं 10 से 45 सेन्टीग्रेड तापक्रम हो वहां पर इसकी खेती की जा सकती हैं। हरियाणा के सभी स्थानों जहां सिंचाई के साधन मौजूद है इसकी खेती आसानी से की जा सकती है।

भूमि: शतावर की खेती सभी प्रकार की भूमि जिसका जल निकास अच्छी तरह से होता है में की जा सकती है लेकिन हल्की से दोमट मिट्टी जड़ों की अच्छी पैदावार के लिए उपयुक्त है। यह क्षारीय, लवणीय व बाढ़ग्रस्त

भूमियों पर नहीं लगाना चाहिए। पड़ती भूमि, वानिकी क्षेत्रों, खेत की मेढ़ों व ऊँची भूमि में भी इसकी खेती करके अतिरिक्त लाभ कमाया जा सकता है।

भूमि की तैयारी: एक गहरी जुताई (20-30 सैं.मी.) के बाद 2-3 बार हैरो चलानी चाहिए। खेत में सुहागा लगायें तथा घास-फूस निकाल देना चाहिए।

बीज की मात्रा: 4 किलोग्राम प्रति एकड़ पर्याप्त रहता है।

बीजाई का समय व विधि: शतावर की नर्सरी मई-जुन में लगाई जाती है। नर्सरी तैयार करते समय मिट्टी में अच्छी गली-सड़ी गोबर की खाद मिलाकर जमीन से 5-10 सैं.मी. उठाकर क्यारी बनानी चाहिएं। बिजाई के 10-15 दिन बाद अंकुरण शुरू हो जाता है। जब पौधे 30-45 दिन के हो जाएं तो उनको खेत में 60.60 सैं.मी. की दूरी पर रोपाई करें। इसकी बिजाई डिस्क से भी कर सकते हैं जो कि पुराने पौधों से प्राप्त होती है।

खाद व उर्वरक: आमतौर पर इसमें गोबर की खाद या जैविक खाद का प्रयोग करना चाहिए। 10-12 टन गोबर की खाद प्रति एकड़ देनी चाहिए।

सिंचाई: पौधे लगाने के समय एवं 10 दिन बाद पानी लगाना चाहिए। जब बरसात का समय समाप्त हो जाए तो सर्दी में दो बार व गर्मी में प्रत्येक मास में सिंचाई करनी चाहिए। वैसे तो यह असिंचित अवस्था में भी हो सकती है परंतु उपज में कमी आ जाती है।

निराई-गुड़ाई: वर्षा ऋतु में दो बार गुड़ाई करनी चाहिए। उसके 2-3 मास बाद तीसरी गुड़ाई करें यह कंद वाली फ्सल है अत: गुड़ाई करते समय मिट्टी चढ़ाने का कार्य प्रत्येक पौधे पर करना चाहिए ताकि कंदो का विकास उचित एवं अधिक हो सके।

सहारा देना: यह बेलनुमा पौधा होता है जिसको 45 सैं.मी. से बड़ा होने पर बांस का सहारा दिया जाता है।

खुदाई व सफाई: दो से तीन साल बाद जड़ों की खुदाई कस्सी से करनी चाहिए। खोदने के बाद बड़ी व छोटी जड़ों को अलग करें। बड़ी जड़ों को पानी से धोकर साफकरके धूप में सुखाना चाहिए। छोटी जड़ों को मिट्टी में दबाकर रखें तथा अगले साल बीज में उपयोग करें। इसकी जड़ों को 10 मिनट पानी में उबालकर छांव व धूप में सुखा सकते हैं।

उपज: पौधों की आयु के अनुसार 120-200 क्विंटल प्रति एकड़ ताजा जड़ें प्राप्त होती हैं जो कि सूखने के पश्चात् 10-15 प्रतिशत रह जाती हैं।

विक्रय मूल्य: सूखी जड़ों का विक्रय मूल्य 50-100 रु. प्रति किलोग्राम है। इसकी खेती पर लगभग 20,000 रु. खर्च आता है और 2-3 वर्षों में शुद्ध लाभ लगभग एक लाख रुपए होता है।

आई. एस. यादव, ओ. पी. यादव एवं जे. एस. हुड्डा
औषधीय, सगंध एवम् अल्प प्रयुक्त पौध संभाग
अनुवांषिकी एवं पौध प्रजनन विभाग
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार - 125 004

KHANDELWAL AGENCIES
OLD SUBJI MANDI, AJMERI GATE, JAIPUR 302 001 (RAJ)
Tel.: 0141-2367582, 2371974, Mob.: 09828289189, 09828346899
E-mail: raju28375@gmail.com
Distributors
VIBHAAGROTECH LTD.
US AGRI SEEDS
J.U. PEST. & CHEM.P. LTD.
DIVERSEY INDIA P. LTD.
BHARAT INSECTICIDES LTD.
MAKHTESHIM AGAN INDIA P. LTD.
NAGARJUNA AGRICHEM LTD.
SWAL CORPORTION LTD.
KEERTI FERTILIZERS & CHEMICALS
NAGARJUNA FERT. & CHEM.LTD
HINDCHEM CORPORATION
CHEMET WETS & FLOW LTD.

Shri Balaji Enterprises
c-21, krishi upaj Mandi, Sikar (Raj.) Mo. 9414351659
खाद, बीज व कीटनाशक दवाईयों के थोक व खुदरा विक्रेता
अधिकृत विक्रेता
श्री बालाजी एग्रो इन्डस्ट्रीज
चम्बइल फर्टिलाईजर एण्ड केमिकल्स लिमिटेड
कीर्ति फर्टिलाइजर एण्ड केमिकल्स
हिन्दकेम कारपोरेशन
गुजरात स्टेट फर्टिलाईजर एण्ड केमिकल्स
राष्ट्रीय केमिकल्स एण्ड फर्टिलाईजर लिमिटेड
गोल्डन सीड्स
सेन्चुरी सीड्स
पीएचआई सीड्स प्रा.लि.
सीड इनोवेशन
इण्डियन पोटाश लिमिटेड
विभा सीड्स
PIONEER A DuPont Company
Sinnova
IPL
ग्वार, बाजरा व मूंगफली में खरपतवार (कचरा) नष्ट करने की दवाई उपलब्ध।
पशुओं को खिलाने की स्पशेल चूरी भी उपलब्ध है।
मूंगफली की अधिक पैदावार लेने के लिए: कैलरिव एवं सल्फीनो डालें।

कैसे बढाऐं रोशाघास का उत्पादन

यह एक बहुवर्षीय एवं लम्बी बढ़ने वाली (1.5-2.0 मीटर) प्रजाति है जिसे पामारोजा ;च्संउंतवेंद्ध के नाम से भी जाना जाता है। पूरे पौधे से मिलने वाला तेल गुलाब की खुष्बू देता हैं जिसमें 75-90 प्रतिषत तक जेरानियाल ;ळमतंदपवसद्ध होता है। इसकी एक अन्य प्रजाति सोफिया पाई जाती है जो कि देखने में रोषाघास की तरह होती है परन्तु उसमें सुगंध नही होती। अतः प्रजाति का चयन बहुत ही महत्वपूर्ण है तथा दोनों प्रजाति साथ-2 न लगायें अन्यथा परपरागण द्वारा किस्म की गुणवता पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा। यह घास पोएसी कुल का पौधा है जो कि मध्यप्रदेष, आन्ध्रप्रदेष, महाराष्ट्र व केरल के वनों एवं खुले क्षेत्रों में प्राकृतिक रूप से उगता है। भारत लगभग 2.5 करोड़ रु. का तेल निर्यात करता है।

उपयोगिता: रोषाघास से निकलने वाली सुगन्धित तेल गुलाब की गंध वाला होता है। अतः इसका प्रयोग सौन्दर्य प्रसाधन सामग्री (साबुन, अगरबत्ती आदि) एवं सुगन्धित द्रव्य बनाने वाले उद्योगों में होता है।

जलवायु: इस फसल के लिए गर्म व खुश्क मौसम अच्छा रहता है।

भूमि: कम उपजाऊ व हल्की दोमट मिट्टी जिसमें पानी न ठहरता हो, इसके लिए अच्छी रहती है।

पौध तैयार करना: नर्सरी मई-जून में तैयार की जाती है। इसके लिए 10 मीटर लम्बी एक मीटर चौड़ी व 30 सें.मी. ऊँची नर्सरी तैयार की जाती है। प्रत्येक नर्सरी में दो-तिहाई भाग गोबर की खाद डालनी चाहिये। एक एकड़ के लिए इस प्रकार की 6-8 नर्सरी तैयार की जाती हैं। इसके लिए 2 किलो बीज पर्याप्त रहता है। नर्सरी बोते समय लाईन से लाईन की दूरी 5-6 इंच रखें। जड़ गलन का बीमारी की रोकथाम के लिए 0.3 प्रतिशत ब्रासीकाल का घोल बनाकर छिड़काव करें। 35-40 दिन बाद जब पौध 5-6 इंच ऊँची हो जाती है तब इसकी समतल खेत में रोपाई की जाती है।

पौध की रोपाई: रोपाई के समय (जुलाई-अगस्त) लाईन से लाईन की दूरी 18 इंच (45 सैं.मी.) एवम् पौधे से पौधे की दूरी 12 इंच (30 सैं.मी.) रखें। रोपाई के तुरन्त बाद खेत में पानी लगायें।

खाद: खेत समतल व अच्छी तरह तैयार करना चाहिये। एक एकड़ के लिए 16-20 गाड़ी गोबर की खाद आखिरी जुताई के साथ खेत में मिला दें। रोपाई के समय नमी की मात्रा अच्छी होनी चाहिये।

सिंचाई: रोपाई के तुरन्त बाद 2-3 सिंचाईयां जल्दी-जल्दी करें ताकि पौध जड़ पकड़ सकें लेकिन पानी खड़ा न रहने दें। गर्मियों में नमी बनाये रखने के लिए 15-20 दिन के अन्तर पर तथा सर्दियों में एक मास के अन्तर पर सिंचाई करें।

निराई-गुड़ाई: तेल की गुणवत्ता बनाये रखने के लिए खेत में से खरपतवारों का निकालना आवश्यक है। आरम्भ में दो-तीन गोड़ाई करने से पौधों की बढ़वार अच्छी होती है। एक से डेढ़ मीटर ऊँचा होने के बाद खरपतवार निकालने की कोई आवश्यकता नहीं रहती।

बीमारी व रोकथाम: इस फसल पर कोई बीमारी नहीं लगती। मकड़ी का प्रकोप पत्ती को पीला कर देता है। ये कीड़ें पत्तों की निचली सतह पर चलते दिखाई देते हैं तथा जाला भी दिखाई देता है। इससे पौधे की बढ़वार रुक जाती है जिससे सारा खेत पहले पीला तथा बाद में भूरे रंग का हो जाता है। इससे बचने के लिए मैटासिस्टाक्स (0.2 प्रतिशत) का घोल बनाकर पत्तों पर अच्छी तरह छिड़कना चाहिये। आवश्यकता पड़ने पर 15 दिन बाद दूसरा छिड़काव भी कर देना चाहिए।

कटाई व तेल की मात्रा: रोपाई के बाद पहली कटाई अक्तूबर-नवम्बर में, दूसरी अगले वर्ष मई-जून में तथा तीसरी सितम्बर-अक्तूबर में की जा सकती है। इस प्रकार प्रति वर्ष 2-3 कटाईयां ली जा सकती है तथा प्रति वर्ष 80-100 क्विंटल प्रति एकड़ हरा चारा प्राप्त किया जा सकता है जिससे 0.3 प्रतिशत की दर से 24-30 किलो तक तेल निकाला जा सकता है। यह फसल रोपाई के 3-4 साल बाद तक कटाई देती रहती है।

तेल की कीमत व कुल आय: इसके तेल की कीमत तेल में जेरानियोल नाम के अल्कोहल पर आधारित है। इसकी मात्रा 75 प्रतिशत तक या इससे भी अधिक हो सकती है। तेल का औसत मूल्य 400-500 रुपये प्रति किलो है। इस प्रकार प्रति वर्ष 12000-15000 रुपये प्रति एकड़ का तेल प्राप्त किया जा सकता है।

इसका तेल दिल्ली के सदर बाजार, तिलक बाजार तथा भारत के अन्य हिस्सों में कोसमैटिक्स व इत्र बनाने वालों को भी बेचा जा सकता है।

आई. एस. यादव, ओ. पी. यादव एवं जे. एस. हुड्डा
औषधीय, सगंध एव् अल्प प्रयुक्त पौध संभाग
अनुवांषिकी एवं पौध प्रजनन विभाग
सी. सी. एस. हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार - 125 004

जैविक खेती में पौध संरक्षण

प्रकृति का नियम है ''जीवो जीवस्य भौजनम'' प्रकृति में फसलों को हानि पहुंचाने वाले कीट है तो साथ इन कीटों के दुष्मन कीट भी मौजूद हैं। पहले प्रकार के कीट पौधों का रस चूस कर वायरल संकमण करते हैं जैसे चेपा, हरा तेला, थ्रिप्स, लाल मकड़ी, पेन्टेड बग इत्यादि। इन कीटों के अनेक प्राकृतिक दुष्मन भी हैं जैसे लेडी बर्ड बीटल दाल काइसोपा व मकड़ी इत्यादि। दूसरी तरह के कीटों में लट प्रमुख है जो फसलें कुतरती हैं। ट्राइकोग्रामा, मडवेस्प, रोबर मक्खी, मेन्टिस, पक्षी आदि इन लटों के षत्रु हैं। तीसरे प्रकार के हानिकारक कीट भूमि में रहकर जड़ें खाते हैं। जैसे दीमक व सफठ। द लट कच्चा खाद व फसल अवषेश से खेतों में ज्यादा फैलती है। अत: अच्छी सड़ी गोबर की खाद, कम्पोस्ट डालें। खेत में नमी रहने दें व बिल खोदकर रानी दीमक नष्ट कर दें।

वर्शा ऋतु में पहली भारी वर्शा होने पर सफठ। द लट के प्रौढ़ भूमि से निकलकर नजदीक के पेड़ों ;नीम, बेर, खेजड़ीद्ध को खाते हैं। पेड़ों को खाते भृंगों को पकड़कर व प्रकाष पाष द्वारा नष्ट करना चाहिये व 10-12 टन नीम की खली प्रति हैक्टर खेत में देना चाहिए। मित्र कीटों की उपस्थिति के बावजूद कभी-कभी फसलों के षत्रु कीट आर्थिक क्षति स्तर से जयादा हो जाते हैं तो सुण्डीयों हेतु बी.टी., एन.पी.वी. आदि का उपयोग प्रभावी रहता है। नीम की पत्तियों का रस, तेल व खेती में उपस्थित आजाडीरेक्टिन बहुत प्रभावषाली कीटनाषक है। यह सभी कीड़ों कि रोकथाम करता है। फठ। रोमेनट्रेप व प्रकाष पाष द्वारा भी प्रौढ़ कीट मार कर इनकी संख्या में कमी लाई जा सकती है।

जरूरी है मित्र कीटों का संरक्षण

सभी कीट फसलों को नुकसान पहुंचाने वाले नहीं होते हैं। कुछ कीट फसलों को नुकसान पहुंचाने वाले कीटों को नष्ट करते हैं। अत: कीट नियंत्रण केवल रसायनों से ही नहीं होता अपितु जीवो जीवस्य भोजनम के सिद्धांत पर प्रकृति भी कीट नियंत्रण करती है। लाभकारी कीटों को हम मित्र कीटों के नाम से पुकारते हैं। कीटों के अतिरिक्त सांप, कौवे, छिपकली, मैंढक, गौरेया, कठफोड़वा आदि भी कीट नियंत्रण में सहायक हैं। परभक्षी कीटों में लेडी बर्ड बीटल दाल मोयला, चेपा, माहू, तेला, स्केल, मिलिबग आदि कीटों का नियंत्रण करती हैं। एक बीटल एक दिन में 5. तक मोयला खा जाती है। मेन्टिस की संख्या यद्यपि कम होती है किन्तु यह एक दिन में 16. तक कोमल शरीर वाले हानिकारक कीड़े खा जाता है। इसी तरह कायसोपा नामक कीट जो हल्के हरे रंग का पारदर्षी पंखों वाला होता है, मोयला, सफेद मक्खियों, बारीक छोटे कीड़ों व उनके अण्डों को तथा कपास के गोले के कीड़ों को पुरूआती अवस्था में खाता है मकड़ी दिन में 16 तक कीट खा जाती है। फ्लाईमड वेस्प ;भिरड़द्ध खेत की सुण्डीयों को खाता है। इन कीटों व पक्षियों को पहचान कर इनका संरक्षण करना चाहिये। यदि फसल में दो हानिकारक व एक मित्र कीट के अनुपात मे उपस्थित है तो किसी कीटनाषक के छिड़काव की आवष्यकता नहीं होती है।

ट्राइकोग्रामा:-

यह मित्र कीट है यह आकार में इतना सूक्ष्म है कि आलपिन के सिरे पर 8-1. व्यस्क बैठ सकते हैं। ये पतंगों के समूह के हानिकारक कीटों के अण्डों में अपने अण्डे देता है व प्यूपा अवस्था तक अपना जीवन चक उस अण्डे में बिताकर व्यस्क बन जाता है फिर पुन: पतंगों के अण्डों में अपने अण्डे देने लगता है। इसका जीवन चक गर्मियों में 8-1. दिन व सर्दियों में 9-12 दिन होता है।

उपयोग विधि:-

एक कागज का कार्ड जिसे ट्राइकोकार्ड कहते हैं पर ट्राइकोग्रामा के बीस हजार अण्डे लगे होते हैं। अण्डे फूटने की तिथि से एक दिन पहले इन कार्डों को खेत में 10-1. मीटर की दूरी पर बांध देते हैं। एक हैक्टर में 10. स्थानों पर ट्राइकोकार्ड लगाते हैं। इनके अण्डे से फूटकर कीट निकलकर खेत में समान रूप से फैल जाते हैं। सावधानी रखें कि इन काड्र्स पर सूर्य की सीधी धूप ना पड़े।

फठरोमेन ट्रेप:-

प्रकृति में नर व मादा कीट एक दूसरे को अपनी ओर आकर्शित करने हेतु विषेश प्रकार की गंध हारमोन्स छोड़ते हैं। जिसके कारण ये एक दूसरे के पास पहुंच जाते हैं। वैज्ञानिकों ने इन हारमोन्स को पहचान कर प्रयोगषालाओं में इनकी गंध से केप्सूल तैयार कर लिये हैं। जिनकी गंध कई गुणा ज्यादा है। एक कीप के नीचे थैली लगी होती है व ऊपर तस्तरी लगी रहती है। तस्तरी में अंदर की तरफ कैप्सूल ;ल्यूरद्ध लगा देते हैं। इसकी गंध से नर कीट आकर्शित होकर आते हैं व कीप में गिरकर थैली में फंस जाते हैं इससे नर व मादा कीट मिल नहीं पाते हैं। जिससे अगली पीढ़ी का जन्म नहीं हो पाता है। इसे खेत में फसल से एक फुट ऊपर लकड़ी के सहारे लगाया जाता है।

प्रकाशपाष से कीट नियंत्रण

वर्शा के मौसम में प्रौढ़ तितलियां, कीट, मोथ, भृंग आदि अपने साथी की तलाष में रोषनी की ओर आकर्शित होते हैं। इनमें ज्यादातर हानिकारक कीट होते हैं। यदि खेत में बल्ब लगा दें व उसके नीचे एक परात/तगारी या गड्ढ़ा बनाकर उसमें मिट्टी का तेल या कीटनाषी मिलाकर पानी भर देवें। सायंकाल से रात्रि 1. बजे तक बल्ब या लालटेन जलाएंगें तो कीट आकर्शित होंगें व रोषनी से टकराकर नीचे पानी में गिरकर मर जाते हैं व फसलों में लटें नहीं होंगी।

एन.पी.वी. का छिड़काव:-

हरी सुण्डी/लट के नियंत्रण हेतु एन.पी.वी. के घोल का छिड़काव करते हैं। इसके छिड़काव से लटें संकमित होकर 3-4 दिनों में मर जाती हैं व पौधों पर लटक जाती हैं। इन्हें चुन-चुन कर पीस कर पानी में मिलाकर पुन: छिड़काव किया जा सकता है।

बी.टी. का छिड़काव

फली छेदक नियंत्रण हेतु एक लीटर प्रति हैक्टर बी.टी. का छिड़काव करने से लटें एक से 3 दिन में मर जाती हैं।

पक्षियों द्वारा कीट नियंत्रण:-

खेत में बांस ग रूप में लगा देते हैं व इसके दोनों और छोटी क्यारियों में गुड़ का पानी रखते हैं। इससे पक्षी आकर्शित होते हैं व हानिकारक कीटों को खाते हैं।

बीमारियों का प्रबंध

जैविक विधियों द्वारा बीमारियों का नियंत्रण कीट नियंत्रण के बजाय थोड़ा मुष्किल होता है। अत: फसलों को रोगों से बचाने हेतु षुरू से सावधान रहना चाहिये व निम्न बिन्दुओं को अपनाना चाहिये-

1. ग्रीश्मकालीन गहरी जुताई करने से भूमि में छिपे हानिकारक जीवाणु नष्ट हो जाते हैं।
2. फसल बदल कर बोयें। एक फसल की बुआई लगातार नहीं करें इससे फसल में लगे कीटाणुओं को अगले मौसम में पोशक पौधे नहीं मिलेंगे और मर जायेंगे।
3. रोगरोधी किस्मों का चुनाव करना चाहिये इनमें रोगों से लड़ने की षक्ति होती है।
4. बीज गर्मी में तेज धूप में सुखाकर बोना चाहिये जिससे इसमें उपस्थित जीवाणु मर जायें।
5. ट्राइकोडर्मा फफूंद से बीज उपचारित कर बोना चाहिये जिससे ये बीज व भूमि जनित रोगों से छुटकारा दिला सके।
6. रोगी पौधों को देखते ही उखाड़ कर जला देना चाहिये ताकि रोग आगे अन्य पौधों में न फैले।

ट्राइकोडमा:-

ट्राइकोडर्मा नामक मित्र फफूंद द्वारा जड़गलन, उखटा, तनागलन, आदि भूमिजनित फफूंद रोगों से फसलों को बचा सकते हैं। ट्राइकोडर्मा से बीजोपचार, भूमि उपचार, जड़ोपचार करने से मृदा में ये अपनी संख्या बढ़ा लेती हैं व रोग पैदा करने वाली हानिकारक फफूंद को फैलने से रोक देती हैं व नष्ट कर देती हैं।

उपयोग विधि:-

बीज उपचार हेतु बीज बर्तन में लेकर भिगोयें तथा 4 से 8 ग्राम ट्राइकोडर्मा पाऊडर प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से मिलाकर बीजों को हिलाकर दवा उन पर चिपका कर बुआई करें। जड़ोपचार हेतु 5 लीटर पानी में 50. ग्राम ट्राइकोडर्मा मिलाकर घोल बनायें। घोल में जड़ों को 3. मिनट डुबोकर पौध रोपित करें तथा बचे हुए घोल को खेत में प्रयोग कर लें। भूमि उपचार हेतु एक किलो ट्राइकोडर्मा पाऊडर 3. किग्रा सड़ी गोबर की खाद में मिला दें। इसे एक एकड़ में छिड़ककर मिट्टी में मिला दें फिर बुवाई करें। राज्य में जयपुर, अजमेर, बून्दी, चित्तौड़गढ़, भरतपुर, जोधपुर, बांसवाड़ा व हनुमानगढ़ मे स्थित कीट प्रबंध प्रयोगषालाओं में ट्राइकोडर्मा का उत्पादन किया जा रहा है।

कीट व रोग से बचने के देषी उपाय

कुछ किसानों ने अपने स्तर पर देषी उपाय करके कीट रोग नियंत्रण में सफलता पाई है। इन उपायों की वैज्ञानिकों द्वारा पुश्टि होना अभी बाकी है। फिर भी किसानों की जानकारी के लिए इनका विवरण दिया जा रहा है।

छाछ का कीट-रोग नियंत्रण में उपयोग

1. देषी गाय का 10-15 दिन पुराना खट्टा छाछ 10. से 15. मि.ली. को 15 लीटर पानी में मिलाकर उसे एक सार कर लें। इसको चना एवं अरहर में लगी इल्लियां ;सुण्डीयाद्ध एवं मौजेक बीमारी से ग्रस्ति फसल पर छिड़काव करें।
2. 4 लीटर छाछ 10. लीटर पानी में मिलाकर बुवाई के पहले भूमि पर छिड़कें। यह मृदा अनुकूलन का कार्य करेगी।
3. 1. लीटर छाछ को एक मटके में एक माह तक रखें। बाद में इसमें आधा किलो गेहूं का आटा मिलाऐं। इस मिश्रण को पतला करके चने के खेत में चने की इल्ली का नियंत्रण करने के लिए छिड़काव करें।
4. चने का उकठा रोग फ्यूजे विल्ट के नियंत्रण के लिए चने के बीज को छाछ से 4 घंटे उपचारित कर बुवाई करें।

मटका खाद

15 किलोग्राम ताजा गोबर, देषी गाय का 15 लीटर ताजा गौमूत्र तथा 15 लीटर पानी मिट्टी के घड़े में घोल लें। उसमें 25. ग्राम गुड़ भी मिला दें। इस घोल को मिट्टी के बर्तन में ऊपर से कपड़ा या टाट मिट्टी से पेक कर दें। 4-5 दिन बाद इस घोल में 20. लीटर पानी मिलाकर एक एकड़ खेत में समान रूप से छिड़क दें। यह छिड़काव फसल बोने के 15 दिन बाद करें। पुन: सात दिन बाद दोहरायें।

लहसुन का कीट नियंत्रण में उपयोग

2.5 किग्रा लहसुन की कलियां छीलकर पाटे पर चटनी के समान लुगदी तैयार करें। यह लुगदी 50. लीटर पानी में मिलायें तथा अच्छी तरह हिलाकर एक सार कर लें। फिर इसे मोटे कपड़े से छान लें। जिन फसलों पर इल्ली प्रकोप हो उसमें इसका छिड़काव सूर्यास्त के समय करें। इल्लियां या तो मर जायेंगी या निश्किय हो जायेंगी।

सीताफल के बीज से कीटनाषक

सीताफल के बीज में 3 क्योमोसीन-2 रसायन होता है, जो कीड़ों के लिये जहरीला है। यह कपास की घेंटी खाने वाली इल्ली, टमाटर खाने वाली इल्लियां, मिर्च के थ्रिप्स, भिंडी के जैसिड, मोयला, चने की इल्ली एवं ज्वार के कीड़ों के नियंत्रण में प्रभावी पाया गया है। 2 किलो सीताफल बीज के चूर्ण का अर्क बनाकर उसे 20. लीटर पानी में घोलकर प्रति एकड़ छिड़काव करें।

गौमूत्र का उपयोग

गौमूत्र में उपस्थित गंधक, मैगनीज और कार्बोलिक एसिड कीटनाषक व कीट प्रजनन रोधक का कार्य करते हैं तथा नत्रजन, फास्फोरस, नाइट्रोजन, पोटेषियम, लोहा, चूना, ताम्बा, सोडियम, आदि तत्व वनस्पति को निरोगी तथा सषक्त बनाते हैं। 3 से 1. लीटर गौमूत्र व एक किलो नीम की पत्तियां तांबे के बर्तन में 15 दिन गलने दें, फिर उबालें व 5. प्रतिषत रहने पर ठण्डा करें व 50. लीटर पानी मिलाकर छिड़काव करें।

दीमक नियंत्रण

1. मक्का के भुट्टे से दाना निकालने के बाद जो गिण्डी बचती है, उसे 6-7 गिंडी एक घड़े में रख लें। उस घड़े को खेत में गड्ढ़ा खोदकर ऐसे गाड़ें कि उसका मुंह जमीन से एक इंच ऊपर रहे। घड़े के मुंह पर सूती कपड़ा बांध दें। इस प्रकार 10. मीटर पूरे खेत में घड़े गाड़ दें। आप देखेंगे कि 10-12 दिनों में घड़े में दीमक भर गई है। अब इन घड़ों को जमीन से निकालकर आग जलाकर गर्म करने से पूरी दीमक मर जायेगी।

शेष पृष्ठ 7 पर...

ग्वारपाठा एक बहुउपयोगी औषधीय फसल

घी के संरक्ष्य तापच्छित पीत मज्जा होने से इस पौधे को 'घृतकुमारी' या 'घीकुवार' कहते हैं। इसको हरियाणा, मध्य प्रदेष के गाँवों में ग्वार पाठा के नाम से जानते हैं।

रासायनिक घटक और उपयोगिता: इसमें ल्युपिओल, सेलीसीलीक एसिड, सिनामोनिक एसिड, फिनोल तथा गन्धक तत्व पाये जाते हैं जो फफूंदी, बेक्टीरीया, मोल्ड तथा वायरस संक्रमण से बचाते हैं। ल्युपिओल और सेलीसीलीक एसिड दर्द हरण कार्य करते हैं, अन्य तत्व जैसे कोलिसटीरोल, केमपरसटीरोल और बी-साइटोसटीरोल बहुत उपयोगी हैं तथा जले हुए घावों पर, चोट पर, बाय में (आरथराइटिस), पुराना बुखार, अपचन, अल्सर, पाचन तन्त्र में, चर्म रोगों, आन्तों और पेट की अन्य बीमारीयों में, कोलिसटीरोल को कम करके हृदय रोगीयों को लाभ पहुँचाता है। इमोडीन और लेक्टीन तत्व कैंसर जैसी बीमारीयों को ठीक करने में काम आता है।

इसका जैल (गुदा) सौन्दर्य प्रसाधन की सामग्री जैसे शैम्पु, लोषन, चेहरे की क्रीम आदि बनाने के काम आता है।

प्रजातियाँ:

एलोय वीरा (एलोय बारबेडेंसिस): यह मुख्य प्रजाति है जो अधिकत्तर क्षेत्रों में उगायी जाती है।

एलोय इन्डिका: चेन्नई से रामेष्वरम तक पाई जाती है, इसे छोटा ग्वारपठा भी कहते हैं। आकार में 6-7 ईंच से 1 फुट लम्बे तथा किनारे नुकीले होते है। ज्वर आदि में उत्तम हैं।

एलोय रूपेसेन्स: लाल ग्वारपठा के नाम से भी जानते हैं बंगाल के आस पास क्षेत्र में मिलता है। नारँगी और लाल रंग के फूल आते है। पत्तों का नीचे का भाग बैंगनी रंग का होता है। इसका उपयोग पाचक के रूप में उदरषूल, आन्तों के कीड़ों के इलाज के लिए भी करते हैं।

जाफाराबादी ग्वारपठा: सौराष्ट्र के समुद्र तट के क्षेत्र में पाया जाता है। पत्ते तलवार के आकार के श्वेत धब्बे युक्त होते है।

एलोय एबिसिनिका: काठियावाड़ व खंबात के खाड़ी क्षेत्र में मिलता है। पत्ते अधिक चौड़े व पुष्प दण्ड अधिक लम्बा होता है।

एलोय फीरोक्स: अफ्रीकी प्रजाति है। पौधा बहुत ऊँचा (9-10 फुट) तथा मोटी पत्तियों से युक्त होता है। इसमें श्वेताभ पुष्पों से मुक्त पुष्पदण्ड निकलता है।

जलवायु: यह भारत के आमतौर पर सभी क्षेत्रों में उगाया जा सकता है। इसको पानी की आवश्यकता बहुत कम है। अत: इसको राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र तथा हरियाणा के शुष्क इलाकों में उगाया जा सकता है।

जमीन: इसकी काश्त के लिए मोटी रेत वाली दोमट मिट्टी जिसका पी. एच. 8.0 हो, उपयुक्त होती है। पानी के निकास का उचित प्रबंध अति आवश्यक है।

भूमि की तैयारी: 20-30 सैं.मी. तक की गहराई वाली 1-2 जुताई पर्याप्त है। जमीन को छोटे-छोटे समतल प्लाटों में वितरित कर लेना चाहिए।

खाद: 5-6 टन गोबर की खाद प्रति एकड़ जमीन को तैयार करते समय अच्छी तरह मिला देना चाहिए। लकड़ी की राख को बिजाई के समय और बाद में पौधों के चारों ओर डाल देना चाहिए।

बीजाई का समय: इसकी बीजाई सिंचित क्षेत्रों में सर्दी के महीनों को छोड़ कर सारा वर्ष की जा सकती है। परंतु अच्छी पैदावार के लिए इसकी बिजाई जुलाई-अगस्त के महीनों में करनी चाहिए।

बीजाई का तरीका: तीन से चार महीनों के सकर चार पांच पत्तों वाले लगभग 20-25 सैं.मी. लम्बाई के 60. 60 सैं. मी. की दूरी पर लगाने चाहिए। सकर के चारों तरफजमीन को अच्छी तरह से दबा देना चाहिए। 5,000 से 5,500 सकर एक एकड़ जमीन के लिए काफी हैं।

अंतर फसलें: आँवला, गुग्गल, बेल या फलदार वृक्ष जैसे आम, नींबु, अनार, संतरा, किन्नु के मध्य अन्तर फसल के रूप में उगाने से अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

गमले में खेती: जल की कम आवष्यकता है इसलिए आप ग्वारपाठा को गमलों में लगा कर घर की शोभा बढ़ा सकते हैं और व्याधियों से छुटकारा पा सकते हैं।

सिंचाई:

पहली सिंचाई बीजाई के तुरंत बाद करनी चाहिए। 2-3 सिंचाई जल्दी-जल्दी देनी चाहिएं ताकि शकर अच्छी तरह से स्थापित हो जाएं। 4-6 सिंचाइयां हर वर्ष देनी चाहिए।

निराई-गुड़ाई: बीजाई के एक मास बाद पहली गुड़ाई करनी चाहिए। 2-3 गुड़ाइयां प्रति वर्ष बाद में करनी चाहिए। खरपतवार बिल्कुल नहीं होने चाहिएं। बीमारी वाले तथा सूखे पौधों को निकाल देना चाहिए।

बीमारी व कीड़े: अभी तक किसी बीमारी व कीड़ों का प्रकोप इस फसल पर नहीं पाया गया है। कभी-कशी दीमक लग जाती है तथा छोटे कीड़े (मिलीबग) आ जाते हैं। इसको रोकने के लिए हल्की सिंचाई करनी चाहिए।

कटाई: पौधा लगाने के एक वर्ष बाद हर तीन माह में प्रत्येक पौधे पर 3-4 छोटी पत्तियां छोड़कर शेष सभी पत्तियों को तेज धारदार हँसिये से काट लेना चाहिए। पत्तों की पैदावार एक बार लगाने से 5 वर्ष तक प्राप्त कर सकते है।

बाजार भाव: इसके ताजा पत्ते 2-3 रु. प्रति किलो तक बिकते हैं। विदेषों में एलुआसार और जैल की बहुत माँग है। ठीक इसी तरह हमारे देष में भी निरन्तर मांग बढ़ती जा रही है।

पैदावार: औसतन 150-200 क्विंटल प्रति एकड़ ताजे पत्ते 2 वर्ष बाद की फसल से प्राप्त होते हैं, लेकिन अच्छी भांति देखभाल व सिंचाई से उपजाऊ मिट्टी से 200 से 250 क्विंटल ताजा पत्ते प्रति एकड़ प्राप्त कर सकते हैं।

आमदनी: एक एकड़ से 150 क्विंटल ताजा पत्तियां, 2 रु. प्रति किलो कम से कम भी लगावें तो 30,000 रु. की बिकी जिसमें से कुल खर्चे के 8 से 10 हजार रूपये प्रति एकड़ निकालकर शुद्ध मुनाफा 20 से 22 हजार रूपये कमाया जा सकता है।

आई. एस. यादव, ओ. पी. यादव एवं जे. एस. हुड्डा
औषधीय, सगंध एवम् अल्प प्रयुक्त पौध संभाग
अनुवांषिकी एवं पौध प्रजनन विभाग
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार - 125 004

शेष पृष्ठ 6 का...

जैविक खेती में पौध संरक्षण...

षेश बची गिण्डी के साथ कुछ और अच्छी गिण्डी भरकर घड़े को पुन: गाड़ दें। इस प्रकार तीन बार करने से खेत की पूरी दीमक समाप्त हो जायेगी।

2. फल वृक्ष या छायादार पेड़ लगाते समय गड्ढे में नीचे नीम, आक व धतूरे के पत्ते कूट कर डालें इससे दीमक नहीं लगेगी।

नीम पत्तियों का कीट नियंत्रण में उपयोग

1. नीम पत्ती 5 किलो को तीन लीटर पानी में उबालें, आधा रहने पर छान लें, 15. लीटर पानी में इसे मिलाकर उसमें दो लीटर देसी गाय का मूत्र मिलाकर एक एकड़ फसल पर छिड़कें। लटें समाप्त हो जायेंगी।

2. पांच लीटर देसी गाय के मट्ठे में 1.5 किलो नीम की पत्ती डालें, इसे सात दिन तक सड़ने दें, इसके बाद छानकर नीम की पत्तियां इसी में निचोड़ दें। इस नीम युक्त मिश्रण को 15. से 20. लीटर पानी में मिलाकर एक एकड़ फसल पर छिड़कें इससे इल्ली/लट्ट व माहू दोनों मर जाते हैं।

संगीता मेहता
विद्या वाचस्पति पौध व्याधीद्ध
कृषि महाविद्यानय, बीकानेर डॉ. दयानन्द
सहायक प्राध्यापक (शस्य)
कृशि विज्ञान केन्द्र, आबूसर-झुन्झुनूं
डॉ. एस.एम. मेहता
कार्यक्रम समन्वयक
कृशि विज्ञान केन्द्र, आबूसर-झुन्झुनूं

किसानों की हुंकार के आगे झुकी सरकार

किसानों के संघर्ष की मुहिम रंग लाती दिख रही है। हुंकार के आगे झुकी सरकार ने किसान प्रतिनिधियों को शामिल करते हुए महत्वपूर्ण मुद्दों पर समितियां गठित करने पर सहमति दे दी है। इनमें केंद्र सरकार के मंत्री भी शामिल रहेंगे। उम्मीद जताई जा रही है कि समिति एक-डेढ़ महीने में रिपोर्ट सौंप देगी। जल-जंगल-बीज-जमीन, हों किसानों के अधीन..की हुंकार बुलंद कर भारतीय किसान यूनियन की अगुवाई दिल्ली में जुटे खेतीहरों की बात आखिर सरकार को सुननी पड़ी। बुधवार रात मंत्री समूह से किसान प्रतिनिधिमंडल की वार्ता हुई तो गुरुवार को कृषि मंत्री शरद पवार से भाकियू के राष्ट्रीय प्रवक्ता राकेश टिकैत के नेतृत्व में किसान प्रतिनिधि मंडल की वार्ता हुई। वार्ता के दौरान कृषि मंत्री ने बुधवार रात दिए मंत्री समूह के आश्वासन पर अमल करते हुए समिति गठित करने पर सहमति दे दी। इन समितियों में एफआरपी (फेयर एंड रेम्युनरेटिव प्राइस), एफडीआइ-आर (फॉरेन डायरेक्ट इन्वेस्टमेंट इन रिटेल) व एफटीए (फ्री ट्रेड एग्रीमेंट) पर कमेटी गठित होंगी। भाकियू प्रवक्ता राकेश टिकैत ने बताया कि बुधवार को मंत्री समूह ने समिति गठन का आश्वासन दिया था। गुरुवार को कृषि मंत्री ने समितियों पर अपनी सहमति दे दी। उन्होंने बताया कि एफआरपी (उचित लाभकारी मूल्य) पर गठित समिति की बैठक अप्रैल के पहले सप्ताह में होगी। एफआरपी कमेटी में किसानों की ओर से राकेश टिकैत, अजमेर सिंह लाखोवाल, युद्धवीर सिंह व नजुंडा स्वामी शामिल हैं। भाकियू प्रवक्ता ने कहा कि अन्य समितियों में भी विषय विशेषज्ञों को शामिल किया जाएगा। उन्होंने उम्मीद जताई कि समितियां एक-डेढ़ माह में रिपोर्ट सौंप देंगी। -- यह थीं मुख्य मांगें - किसानों की आय की सुरक्षा, यानी उचित लाभकारी मूल्य मिले। - भूमि अधिग्रहण बिल में आवश्यक संशोधन व श्वेतपत्र जारी हो। - खुला व्यापार समझौता रद हो। - देश में जीएम बीजों का परीक्षण बंद हो, परंपरागत व जैविक खेती पर बल दिया जाए। - किसान आय आयोग का तत्काल गठन किया जाए।

घर की छतों पर होंगे आलू के बेल

लखीसराय । देश में कृषि क्षेत्र के लिए कृषि विश्वविद्यालय का प्रमुख स्थान है। आये दिन कृषि वैज्ञानिक नए नए अनुसन्धानकरते रहते है। ऐसा ही एक कारनामा बिहार में लखीसराय जिले के सूर्यगढ़ा प्रखंड केग्रामवासी किसान प्रमोद कुमार ने अपने घर पर कर दिखाया है। इस किसान ने अपने घर की छत पर आलू की लत्तर लगाई है।

अंग्रेजी से स्नातकोत्तर करने के बाद कृषि के क्षेत्र में विशेष दिलचस्पी रखने वाले लखीसराय जिले के प्रमोद कुमार छत पर अच्छे खासे आलू उगा रहे है। आश्चर्य की बात है कि आलू का यह लत्तर पूरे साल आलू देती रहेगी। आलू उपजाने के लिये न जमीन की जरूरत और न इन्हें निकालने के लिये हाथों में मिट्टी लगेगी। प्रमोद अपने साथ-साथ कृषि वैज्ञानिकोंद्वारा उपलब्ध कराये जाने वाले नये-नये प्रभेदों की जानकारी स्थानीय किसानों को देकर इसका प्रयोग उन्हें अपने खेतों में करने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि जल्द ही किसान पेड़ों से कद्दू तोड़ेंगे तथा आम, नींबू, आंवला और मिर्च का ताजा स्वाद पूरा साल चखेंगे। इस जिले के हलसी स्थित कृषि विज्ञान केन्द्र के दो वैज्ञानिकों के प्रमोद कुमार के घर जाकर आलू की लत्तर को देखा है।

वैज्ञानिकों का कहना है कि पठारी क्षेत्रों में लत्तर पर आलू की खेती होती है लेकिन मैदानी क्षेत्र के लिए यह नईचीज है। उन्होंने किसानों के साथ ही आमजनों को भी इस विधि से घरों में आलू उगाने की सलाह दी।

मिलों को खुले बाजार में चीनी बेचने के लिए ज्यादा समय

मुम्बई। बिक्री अवधि बढ़कर छह माह, कोटा 104 लाख टन रियायत धीरे-धीरे खुले बाजार में बिक्री के लिए पहले मासिक कोटा जारी होता था जिसे पहले तीन महीने और बाद में चार महीने का किया गया अब इस अवधि को बढ़ाकर छह महीने कर दिया गया है अप्रैल से सितंबर के दौरान 104 लाख टन चीनी का कोटा जारी खुले बाजार में चीनी के मूल्य बढने के आसार, मिलें पा सकेंगी बेहतर मूल्य चीनी मिलों को राहत देते हुए केंद्र सरकार ने खुले बाजार में बिक्री के लिए चीनी कोटा की अवधि को चार महीने से बढ़ाकर छह महीने कर दिया है।

खाद्य मंत्रालय ने छह महीनों (अप्रैल से सितंबर) के लिए 104 लाख टन चीनी का कोटा जारी कर दिया है। गर्मियों का सीजन शुरू होने से चीनी की मांग बढने का अनुमान है जिससे मौजूदा कीमतों में हल्का सुधार आ सकता है। खाद्य मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि उद्योग की मांग को मानते हुए मंत्रालय ने खुले बाजार में बेचे जाने वाली चीनी के कोटा की अवधि को चार महीने से बढ़ाकर छह महीने कर दिया है। खुले बाजार में बेचने के लिए पहले मासिक आधार पर कोटा जारी किया जाता था, जिसे पहले तीन महीने और बाद में चार महीने की अवधि के लिए जारी किया जाने लगा। अब इस अवधि को बढ़ाकर छह महीने कर दिया गया है।

उन्होंने बताया कि अप्रैल से सितंबर के दौरान 104 लाख टन चीनी का कोटा जारी किया गया है।

इसके अतिरिक्त अप्रैल से मई (दो महीनों) के लिए सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस) में आवंटन के लिए 3.69 लेवी चीनी का कोटा जारी किया गया है। रंगराजन कमेटी ने भी चीनी उद्योग के डिकंट्रोल के तहत निश्चित अवधि के लिए चीनी बिक्री कोटा की प्रणाली और लेवी चीनी की बाध्यता समाप्त करने की सिफारिश की थी। इंडियन शुगर मिल्स एसोसिएशन (इस्मा) के कार्यकारी निदेशक अबिनाश वर्मा ने कहा कि केंद्र सरकार द्वारा चीनी कोटा की अवधि को बढ़ाकर छह महीने कर देने से मिलों को खुले बाजार में चीनी बेचने की छूट मिल जाएगी। सरकार ने छह महीनों के लिए 104 लाख टन चीनी का कोटा जारी किया है। चीनी बिक्री कोटा की अवधि छह महीने कर देने से मिलों को चीनी बेचने के लिए रणनीति बनाने की आसानी होगी। वे बेहतर मूल्य पाने के लिए पूरे छह माह की अवधि में चीनी बेचने के लिए स्वतंत्र होंगी।

चीनी के थोक कारोबार सुरेंद्र भालोठिया ने बताया कि अप्रैल से बड़े उपभोक्ताओं की मांग निकलने लगेगी, जिससे चीनी की मौजूदा कीमतों में 100 से 150 रुपये प्रति क्विंटल का सुधार आने की संभावना है। चीनी बेचने की अवधि में और ज्यादा छूट मिलने से भी चीनी में मजबूती को बल मिल सकता है। उत्तर प्रदेश में चीनी के एक्स-फैक्ट्री भाव 3,150 रुपये और दिल्ली थोक बाजार में 3,300 रुपये क्विंटल रहे। मुंबई में चीनी के एक्स-फैक्ट्री भाव 2,800 रुपये प्रति क्विंटल चल रहे हैं। इस्मा के अनुसार चालू पेराई सीजन 2012-13 (अक्टूबर से सितंबर) के दौरान 246 लाख टन चीनी का उत्पादन होने का अनुमान है जो पूर्व उत्पादन अनुमान से 3 लाख टन अधिक है।

अप्रैल में 15 फीसदी बढ़ सकती है ग्वार की कीमतें

मुम्बई। मांग - चालू सीजन में अभी तक कुल उत्पादन के 60-65% ग्वार की खपत हो चुकी है फैक्ट फाइल अप्रैल से जनवरी के दौरान कुल 4.44 लाख टन ग्वार गम का निर्यात हुआ चालू वित्त वर्ष के पहले 10 महीनों में 26,459.54 करोड़ रुपये मूल्य के ग्वार गम का निर्यात हुआ हरियाणा की मंडियों में दैनिक आवक 30,000 से 32,000 हजार बोरियां निर्यातकों की मांग बढने से अप्रैल-मई में ग्वार की कीमतों में 10-15 फीसदी की तेजी आने की संभावना है। उत्पादक मंडियों में ग्वार के भाव 10,000 रुपये और ग्वार गम के 30,400 रुपये प्रति क्विंटल चल रहे हैं। ग्वार के कुल उत्पादन का करीब 60-65 फीसदी हिस्सा खप चुका है जबकि अप्रैल में रबी फसलों की आवक शुरू होने से ग्वार की दैनिक आवक कम हो जायेगी। टिंकू राम गम एवं केमिकल प्राइवेट लिमिटेड के डायरेक्टर विपिन अग्रवाल ने बताया कि ग्वार गम की निर्यात मांग पहले की तुलना में बढनी शुरू हो गई है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में इस समय ग्वार गम के निर्यात सौदे 6,000 डॉलर प्रति टन की दर से हो रहे हैं तथा इन भावों में निर्यातकों को अच्छे पड़ते लग रहे हैं। उन्होंने बताया कि अप्रैल-मई में ग्वार गम में निर्यात मांग बढ़ेगी जबकि इस दौरान रबी फसलों की आवक शुरू होने से घरेलू मंडियों में ग्वार की दैनिक आवक कम हो जायेगी जिससे ग्वार की कीमतों में 1,500 से 2,000 रुपये प्रति क्विंटल की तेजी आने की संभावना है। हरियाणा ग्वार गम एंड केमिकल के डायरेक्टर सुरेंद्र सिंघल ने बताया कि चालू सीजन में ग्वार की पैदावार तो करीब 1.75 करोड़ बोरी (एक बोरी-एक क्विंटल) की हुई है।

गांव के गोदामों से भी मिलेगी नेगोशिएबल रसीद

नई दिल्ली। अनाज, मसाले, दलहन, तिलहन, खाद्य तेल, साबुत मसाले, मसाला पाउडर, चाय, कॉफी, तंबाकू और रबर ग्राम स्तर पर सोसायटी के गोदामों को भी दी जा रही है मान्यता अब प्राइमरी सहकारी संस्थाओं के गोदामों में भी जिंसों का भंडारण करके किसान और ट्रेडर्स नेगोशिएबल वेयरहाउस रसीद (एनडब्ल्यूआर) प्राप्त कर सकेंगे। भंडारण विकास एवं नियामक प्राधिकरण (डब्ल्यूडीआरए) ने प्राइमरी सहकारी संस्थाओं के वेयरहाउस को भी रसीद देने के लिए मान्यता देनी शुरू कर दी है। डब्ल्यूडीआरए के टेक्निकल डायरेक्टर डॉ. एन के अरोड़ा ने बिजनेस भास्कर को बताया कि गांव स्तर पर किसानों और ट्रेडर्स को लाभ पहुंचाने के लिए डब्ल्यूडीआरए ने प्राइमरी सहकारी संस्थाओं के गोदामों को भी मान्यता देनी शुरू कर दी है। आंध्र प्रदेश में इसकी शुरूआत की जा चुकी है तथा राज्य में सहकारी संस्थाओं के 13 वेयरहाउसों को नेगोशिएबल वेयरहाउस रसीद देने के लिए मान्यता दी जा चुकी है जबकि 8 और वेयरहाउसों को जल्द ही मान्यता दे दी जाएगी। उन्होंने बताया कि सहकारी संस्थाओं से अभी तक 150 आवेदन वेयरहाउसों को मान्यता देने के लिए मिल चुके हैं।

रबी फसल की देरी से मक्का में तेजी के आसार

नई दिल्ली। रबी मक्का की नई फसल की आवक में देरी होने से कीमतों में 50 से 75 रुपये प्रति क्विंटल की तेजी आने की संभावना है। दिल्ली बाजार में मक्का के दाम 1,525-1,530 रुपये प्रति क्विंटल रहे। चालू रबी में मक्का की पैदावार तो पिछले से बढने का अनुमान तो है लेकिन मक्का में निर्यातकों की मांग से दाम बढ़ रहे हैं। गोपाल ट्रेडिंग कंपनी के प्रबंधक राजेश अग्रवाल ने बताया कि फरवरी में सर्दी बढने से रबी मक्का की फसल 15-20 दिन की देरी से आएगी जबकि खरीफ की आवक उत्पादक मंडियों में पहले की तुलना में कम हो गई है। इसीलिए मक्का की कीमतों में तेजी बनी हुई है। दिल्ली में मक्का की दैनिक आवक मध्य प्रदेश और राजस्थान से मात्र 4 से 5 ट्रकों की है जबकि मंगलवार को यहां इसके भाव बढ़कर 1,525 रुपये प्रति क्विंटल हो गए। अप्रैल में आवक प्रभावित रहने से मौजूदा कीमतों में और भी 50-75 रुपये प्रति क्विंटल की तेजी आने की संभावना है। बिहार की नौगछिया मंडी के थोक कारोबारी पवन अग्रवाल ने बताया कि ठंड पडने से मक्का की नई फसल की आवक 15 से 20 दिन की देरी से बनेगी। इसीलिए कोलकाता में मक्का के दाम बढ़कर 1,640-1,650 रुपये प्रति क्विंटल हो गए हैं। चालू सीजन में पैदावार तो ज्यादा होने का अनुमान है लेकिन नई फसल की आवक अप्रैल मध्य के बाद ही शुरू होगी। उन्होंने बताया कि पिछले साल फसल अप्रैल में रबी मक्का की आवक के समय दाम घटकर 850 रुपये प्रति क्विंटल रह गए थे लेकिन चालू सीजन में भाव 1,100-1,200 रुपये प्रति क्विंटल से नीचे आने की संभावना नहीं है।

बी एम इंडस्ट्रीज के प्रबंधक मदन लाल अग्रवाल ने बताया कि निर्यातक काकीनाड़ा बंदरगाह पहुंच 1,440-1,450 रुपये प्रति क्विंटल की दर से सौदे कर रहे हैं। इसीलिए दक्षिण भारत के राज्यों आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और मध्य प्रदेश की मंडियों में मक्का के दाम तेज बने हुए हैं। हालांकि ऊंचे भाव में पोल्ट्री फीड और स्टार्च निर्माताओं की मांग कम हुई है। इसलिए भारी तेजी की संभावना तो नहीं है लेकिन अप्रैल में दाम तेज बने रह सकते हैं। आंध्र प्रदेश और कर्नाटक की मंडियों में मक्का के दाम बढ़कर 1,320 से 1,340 रुपये प्रति क्विंटल हो गए।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक- सुरेश शर्मा की ओर से सोमानी प्रिंटिंग प्रेस, शर्मा इंडस्ट्रीयल इस्टेट, गोरेगाव, पूर्व, मुम्बई-62 से मुद्रीत किया और 307, लिंकवे इस्टेट, लिंक रोड, मालाड, पश्चिम, मम्बई-400064 यहां से प्रकाशित किया। सम्पादक-सुरेश शर्मा। CONTACT DETAIL: TEL: 022-66998360/61, FAX: 022-66450908, Cell- 09829220788, Email: info@srushtiagro.com, Website: www.srushtiagronews.com